

1R; opu

ikxke u- 325

: r & 24&13

यदि आप रूत से पूछते कि क्या वह जानती थी कि वह सही खेत में जा रही है तो वह कहती, "मुझे नहीं मालूम आप कह क्या रहे हैं।" यदि आप उससे पूछते कि उसने उसी खेत को क्यों चुना तो, मेरे विचार में वह आपसे कहती, "सुबह घर छोड़ने से पहले मैं ने इसके लिए प्रार्थना की थी। मैं ने परमेश्वर से कहा था कि वह मेरा मार्गदर्शन करे। मुझे सच में पता ही नहीं था कि कौन सा रास्ता लूँ परन्तु मैं यहाँ पहुँची और एक खेत देखा जिसमें अच्छा अन्न उपजा था परन्तु उसमें अधिक लोग सिला बीनने नहीं घुसे थे। अतः मुझे विश्वास हो गया था कि इस खेत का स्वामी बहुत कंजूस है परन्तु मार्ग की दूसरी ओर तो खेत में बहुत लोग थे। मैं समझ गई कि वह एक दयालु मनुष्य है और मुझे ऐसा ही खेत चाहिए था क्योंकि मैं परदेशी हूँ और जाति-बाहर की हूँ। मैं नहीं चाहती थी कि वे मुझे बाहर कर दें। इस कारण मैंने यह खेत चुना।" जहाँ तक मैं सोचता हूँ कि जब वह कुछ दूर गई और झिझक कर रुकि तब स्वर्गदूतों ने जो उसे देख रहे थे साँस रोक ली और कहा, "काश, वह सही खेत में जाए।" और मेरे विचार में जब स्वर्गदूत ने देखा कि वह बोअज़ के खेत में प्रवेश कर गई तब सबने राहत की साँस ली होगी। परमेश्वर सबका नियंत्रण करता है। रूत के लिए तो अनिश्चितता थी परन्तु दूसरी ओर परमेश्वर का प्रबन्ध था।

आज के संसार में रहते हुए एक महिमामय बात यह जानना है कि हमारा समय उसके हाथ में है, यह जानना कि वह इस सम्पूर्ण जगत की घटनाओं को आदेश देता है और यह भी जानना कि परमेश्वर ने कहा है कि उसकी अनुमति के बिना उसकी सन्तान के साथ कुछ नहीं हो सकता। आपको स्मरण रखना है कि अय्यूब के चारों ओर एक बाड़ा था और परमेश्वर की अनुमति के बिना शैतान भी उसे छू नहीं पाया था और परमेश्वर तब तक अनुमति नहीं देता है जब तक कि उसका कोई महान और सिद्ध उद्देश्य पूरा न हो। अय्यूब के जीवन में उसका एक महान उद्देश्य पूरा हुआ था। मुझे पूरा विश्वास है कि रूत ने निर्णय लेते समय उसका महत्व नहीं समझा था। उसने बस निर्णय लिया। मेरे विचार में उसने प्रार्थना की और तर्क के आधार पर निर्णय लिया। आज परमेश्वर की सन्तान जो इसलिए निराश हैं कि उसे चिन्ह, अनुभव, ज्योति,

वाणी, दर्शन, स्वप्न नहीं प्राप्त हो रहे, उसे यह समझना है कि आज परमेश्वर इन माध्यमों को काम में नहीं ले रहा है। आज वह अपने वचन के माध्यम से बात करता है और परमेश्वर की सन्तान जो उसकी संगति में रहती है और जिसके जीवन में ऐसा कोई पाप नहीं जिसे उसने अंगीकार न किया हो, और उसने पवित्र आत्मा को दुःखी न किया हो, वह अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर सकता है और जब उसे अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट दिखाई नहीं दे रही हो तो वह निर्णय लेकर आगे बढ़ सकता है। अब सम्भव है कि उसका निर्णय गलत हो तो परमेश्वर किसी उद्देश्य के निमित्त इसकी अनुमति देता है। मैं अपने जीवन में देखता हूँ तो एक घटना ऐसी है जिसमें मैं चाहता था कि परमेश्वर मेरे लिए द्वार खोले परन्तु परमेश्वर ने वह द्वार नहीं खोला। सच तो यह है कि उसने वह द्वार बन्द कर दिया, मेरे मुँह पर। मुझे बहुत बुरा लगा परन्तु मैं परमेश्वर का आभारी हूँ कि उसने वह द्वार बन्द किया क्योंकि अब जब मैं पीछे देखता हूँ तो समझ में आता है कि वही सबसे अच्छा था। जैसे यूसुफ ने पिता की मृत्यु के बाद अपने भाईयों से कहा था – उत्पत्ति 50:20, “यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।” कैसी अद्भुत बात है! और आज यह आपके लिए प्रोत्साहन का कारण हो। संभवतः आप अधीर हो रहे हैं और सोच रहे हैं कि आपको स्पष्ट निर्देशन क्यों नहीं प्राप्त होता है। ऐसे विश्वासी भी हैं जिनके भ्रम में उन्हें स्वर्ग से सीधा सम्पर्क प्राप्त हो। यह तो बहुत अच्छी बात है कि हमें परमेश्वर के निकट आने का हियाव है परन्तु मुझे विश्वास नहीं कि वह हमसे सीधी बात करता है। अतः हम अति सावधान रहें जब हम कहते हैं, “मैं जानता हूँ कि यह परमेश्वर की इच्छा है।” हम हर बार विश्वास से ऐसा नहीं कह सकते हैं परन्तु हम अपना जीवन उसे समर्पित कर सकते हैं, हमारे जीवन में ऐसा पाप न हो जिसका हमने अंगीकार नहीं किया और पवित्र आत्मा को दुःख नहीं पहुँचाया और परमेश्वर की इच्छा में रहें जैसा हम समझते हैं वैसे। हाँ, मेरे मित्रों, आप उसे अद्भुत रीति से समर्पण कर सकते हैं। यदि आप यूसुफ और अय्यूब के समान कठिन परिस्थिति में फँस जाएँ तो अय्यूब के साथ कहें, अय्यूब 13:15, “वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूँगा।” मेरे मित्रों, यह एक महिमामय सत्य है जो जीवन में आनन्द और आशा भर देता है। परमेश्वर की व्यवस्था परमेश्वर की सन्तान के लिए हर एक दिन को हर्षातिरेक बनाती है। मैं प्रसन्न हूँ कि उसने मुझे नक्शा नहीं दिया क्योंकि मैं नये नये मार्गों में चलना चाहता हूँ – उन स्थानों में जहाँ मैं पहले कभी नहीं गया। मैंने एक बार ऐसा ही किया। ओह, वह मार्ग कैसा घुमावदार था और प्रत्येक घुमाव हर्ष प्रदान करता था। वह वसन्त का समय था और चारों ओर

रंग व्याप्त थे और प्रकृति उदार होकर पहाड़ों में रंग भर रही थी। मैं अति प्रसन्न हूँ कि परमेश्वर ने मुझे पहले ही वहाँ के चित्र नहीं भेजे। जीवन हमारे लिए कैसा रोमांचकारी हो सकता है!

: r 2%4 में हम पढ़ते हैं,

*“और बोअज़ बैतलहम से आकर लवनेवालों से कहने लगा,
यहोवा तुम्हारे संग रहे; और वे उससे बोले, यहोवा तुझे
आशीष दे।”*

किसी कारणवश बोअज़ सुबह अपने खेत में पहुँच नहीं पाया। वह एक समृद्ध मनुष्य था अतः उसे वहाँ जल्दी पहुँचने की आवश्यकता भी शायद नहीं थी परन्तु मुझे उसकी मान्यता देख ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक बड़ा मनुष्य था और संभवतः उस दिन सुबह उसे बैतलहम में कोई काम था। संभवतः वह बैंक गया था कि अपने कर्मियों के लिए पैसा निकाले। कारण जो भी रहा हो वह अपने खेत में विलम्ब से पहुँचा।

अब देखिए उसने वहाँ पहुँचते ही पहला काम क्या किया। उसने अपने कर्मियों से कहा, “यहोवा तुम्हारे संग रहे;” यह मुख्य शब्द थे। “और वे उससे बोले यहोवा तुझे आशीष दें।” यह हमारे आज के युग के श्रमिक अगुवों और पैसेवालों का सा स्वभाव नहीं है। आज दुर्भाग्य से ये दो व्यवहार साथ नहीं चलते। स्पष्ट कहूँ तो मैं एक गरीब प्रचारक हूँ। मैं पूँजीपति नहीं हूँ। मेरा पिता एक साधारण कर्मि था। मैं आज का ईश्वर-रहित पूँजीवाद कभी स्वीकार नहीं करता हूँ। आज के श्रमिक नेताओं की बातें सुनकर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर का भय नहीं मानते हैं। मैं किसी का पक्ष नहीं लेता परन्तु यह अवश्य चाहता हूँ कि हम में नया जन्म प्राप्त जैसी सच्ची मसीहियत हो, इस क्षेत्र में। इससे निश्चय सम्बन्धों में सुधार होगा। आप ऐसी भाषा सुन पाएँगे, “यहोवा तुम्हारे संग रहे।” और श्रमिकों की प्रतिक्रिया, “यहोवा तुझे आशीष दें।” वास्तव में, बोअज़ के खेत में पूँजी और श्रम का कैसा अद्भुत मेल था!

: r 2%5 में हम पढ़ते हैं,

*“तब बोअज़ ने अपने उस सेवक से जो लवनेवालों के
ऊपर ठहराया गया था पूछा, वह किस की कन्या है?”*

अब हम कहानी के रोचक भाग पर आ गये हैं। यह परदेशी युवति रूत जो गरीबी, समाज से बहिष्कार और अनन्त विधवा होना स्वीकार करने को तैयार थी, अब खेत में सिला बीन

रही थी। यह एक संयोग ही था कि वह बोअज़ के खेत में गई। बोअज़ बैतलहम नगर का सर्वाधिक स्वीकार्य कुँवारा था। मेरे विचार में बैतलहम की माताओं ने उसे अनेक बार चाय और खाने के निमंत्रण दिये होंगे। कहा जाता है कि पुरुष का मन जीतना उसके पेट के मार्ग से है। मेरे विचार में अनेकों ने यह युक्ति अपनाई होगी परन्तु किसी न किसी कारण वह वहाँ की लड़कियों में रुचि नहीं रखता था। एक दिन उसने अपने खेत में यह मोआबी कन्या देखी और उसे चाहने लगा। उसे देखते ही बोअज़ को उससे प्रेम हो गया था।

आप सोच रहे होंगे कि मैं पहली निगाह में प्यार को मानता हूँ। मैं तो इसमें दृढ़ विश्वास रखता हूँ। मैं ने अपनी पत्नी के समक्ष दूसरी भेंट में ही विवाह का प्रस्ताव रख दिया था। पहली भेंट में तो मैं ने प्रस्ताव इसलिए नहीं रखा था कि वह सोचती मैं जल्दी में हूँ। आप युवाओं, मुझे गलत न समझें। विवाह प्रस्ताव के एक वर्ष बाद हमने विवाह किया था। मैं पहली नज़र में प्यार का समर्थक तो हूँ परन्तु विवाह से पूर्व प्रेम को बहुत समय परखना चाहिए।

बोअज़ की स्थिति भी ऐसी ही थी। यह वास्तव में बोअज़ के खेत में प्रेमकथा है।

: r 2%6 में पह पढ़ते हैं,

“जो सेवक लवनेवालों के ऊपर ठहराया गया था उसने उत्तर दिया, वह मोआबिन कन्या है, जो नाओमी के संग मोआब देश से लौट आई है।”

लवनेवालों का पर्यवेक्षक बोअज़ को बताता है कि वह कौन है। उसके कहने का अभिप्राय है, “तू निश्चय ही उसके विषय क्यों न जाने। वह सिला बीनने आई है।” मेरे विचार में वह बोअज़ से क्षमायाचना करते हुए उसे विश्वास दिलाना चाहता है कि उसका रूत के खेत में आने से कोई स्वार्थ नहीं है। वह कहता है,

: r 2%7 में हम पढ़ते हैं,

“उसने कहा था, मुझे लवनेवालों के पीछे-पीछे पुलों के बीच बीनने और बालें बटोरने दे। तो वह आई, और भोर से अब तक यहीं है, केवल थोड़ी देर तक घर में रही थी।”

पढ़ने से तो स्पष्ट समझ में आता है कि बोअज़ जो उस स्त्री से प्रेम करने लगा था परन्तु उसका पर्यवेक्षक तुरन्त नहीं समझ पाया था, अतः वह उसके आने को अपनी गलती मान कर क्षमायाचना कर रहा था, “वह मोआबिन कन्या है, जो नाओमी के संग मोआब देश से लौट आई है। उसने कहा, ‘मुझे लवनेवालों के पीछे-पीछे पूलों के बीच बीनने और बालें बटोरने दे।’” मैं इन्कार नहीं कर पाया क्योंकि मूसा की व्यवस्था उसे अनुमति देती – वह गरीब है और परदेशी भी है। उसे क्षमा माँगने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि बोअज़ को उस स्त्री से प्रेम हो गया था। इस वृत्तान्त से रूत के विषय बहुत कुछ जानकारी प्राप्त होती है। इससे प्रगट होता है कि वह निश्चय अपने नाम के अनुसार आचरण करती थी। रूत नाम का अर्थ है, “मोहनी या सुषमा।” इस दृश्य में निश्चय ही उसकी सुषमा प्रगट हो रही है। जो काम बैतलहम की समस्त सुन्दरियाँ नहीं कर पाई वह काम इसी युवती ने बिना प्रयास कर दिखाया। उसने तो स्वयं को जाति-बाहर मान लिया था और किसी का ध्यान आकर्षित करने की उसमें कोई आशा नहीं थी। आप उसके आश्चर्य को देख पाएँगे बोअज़ के द्वारा उस पर ध्यान देने के परिणामस्वरूप वह प्रगट करती है।

पर्यवेक्षक से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के पश्चात बोअज़ की प्रतिक्रिया देखिए। वह रूत के पास जाकर उससे बात करता है।

: r 2%8 में हम पढ़ते हैं,

“तब बोअज़ ने रूत से कहा, हे मेरी बेटी, क्या तू सुनती है? किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना, मेरी ही दासियों के संग यहीं रहना।”

मैं निश्चय ही कहूँगा कि यह भाषा असामान्य है। यह व्यक्ति वास्तव में नहीं चाहता था कि गरीब उसके खेत में सिला बीने। मूसा की व्यवस्था में यह अनिवार्य नियम था। मेरे विचार में बोअज़ उदार हृदय मनुष्य था परन्तु उसने लिखकर नहीं लटकाया था, “आकर सिला बीनो।” न ही उसने किसी को आमंत्रित किया था परन्तु यहाँ वह असामान्य रूप से रूत से निवेदन करता है कि वह अन्य किसी खेत में न जाए। “मैं चाहता हूँ कि तू मेरे ही खेत में सिला बीने।” वह यह भी कहता है,

: r 2%9 में हम पढ़ते हैं,

*“जिस खेत को वे लवती हों उसी पर तेरा ध्यान बँधा रहे,
और उन्हीं के पीछे-पीछे चला करना। क्या मैं ने जवानों
को आज्ञा नहीं दी, कि वे तुझे तंग न करें? और जब जब
तुझे प्यास लगे, तब तब तू बरतनों के पास जाकर पानी
पीना जिसे जवान लोग भरते हैं।”*

यहाँ दो बातें ध्यान देने योग्य अर्थात् अति महत्वपूर्ण हैं। वह रूत को सिर्फ अपने खेत में सिला बीनने का निमंत्रण ही नहीं देता है वरन् उस पर सुरक्षा का हाथ भी रखता है। उसने कहा, “क्या मैं ने जवानों को आज्ञा नहीं दी कि तुझे तंग न करें?” सच तो यह है कि उस युग में रूत जैसी स्त्री के लिए चारों ओर खतरा था क्योंकि वह एक तो विधवा थी और दूसरी, वह मोआब से थी। अति सम्भव था कि उसे बहुत अधिक अपमानित किया जाता। यही नहीं उसकी आन भी सुरक्षित नहीं थी। बोअज़ यह जानता था इसलिए उसने उस पर अपना सुरक्षा का हाथ रखा।

उस युग में बैतलहम की सड़कें उतनी ही असुरक्षित थीं जितनी आज की शहरी सड़कें हैं। अफ्रीका के एक मिशनरी ने कहा, “अफ्रीका के जंगलों में, जहाँ मैं सेवा करता हूँ, विचरण करना अमरीका के लोस एन्जलीस शहर की सड़कों की अपेक्षा बहुत सुरक्षित हैं।” सभ्यता आज इस स्तर पर पहुँच गई है, विशेष करके अपराध के प्रति मुक्त विचार रखनेवाली हमारी सभ्यता! उसका कहना है कि अभागे अपराधी को समाज में पुनः लाना है और सुधारना है। क्या मैं कहूँ कि मुख्य उद्देश्य तो उसे दण्ड देना है। इसी कारण अपराधी को बन्दीगृह में रखा जाता है। उद्देश्य केवल उसे दण्ड देना है, अन्य कुछ नहीं। आज वे वास्तव में अपराधियों को कितना सुधार पाए हैं? क्या मैं आपसे कह सकता हूँ कि यह विचार केवल भ्रम है। परमेश्वर यह जानता है क्योंकि वह मनुष्य को समझता है — वह आपको और मुझे जानता है। वह जानता है कि आपमें और मुझ में पुराना स्वभाव है। हम जब तक मसीह के पास नहीं आएँगे हममें सुधार नहीं होगा, मेरे मित्रों!

अब आप बोअज़ के इस भद्र एवं उदार व्यवहार के प्रति रूत की प्रतिक्रिया देखें।

: r 2%10 में हम पढ़ते हैं,

*“तब वह भूमि तक झुककर मुँह के बल गिरी, और उससे
कहने लगी, क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर
अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है?”*

जब मैं ने अपनी पुस्तक, “रूत द रोमांस ऑफ रिडेम्पशन” (रूत मुक्ति की प्रेमकथा) लिखी थी तब मैं ने रूत को गंवारा या झूठा प्यार का दिखावा करनेवाली स्त्री कहा था कि वह चतुराई दिखा रही थी जब उसने बोअज़ से कहा, “क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है?” परन्तु अब मैं उस विचार को स्वीकार नहीं कर पाता हूँ। वह कदापि ऐसी नहीं है। नाओमी के साथ बैतलहम आने से पूर्व उसे पूर्ण चेतावनी दी गई थी और उसकी स्थिति समझा दी गई थी। यही कारण था कि ओर्पा बैतलहम नहीं आई थी। ओर्पा आत्मत्याग करने के लिए तैयार नहीं थी। वह आजीवन विधवा और कंगाल रहना और जाति—बाहर होना नहीं चाहती थी। अतः वह मोआब में ही रह गई परन्तु रूत इन सब बातों को जानकर भी बैतलहम आई। बोअज़ के खेत आने पर उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उस पर कोई कभी ध्यान देगा। सत्य तो यह है कि वह सोच रही थी कि वे उसे नीचा देखेंगे और अनदेखा करेंगे क्योंकि उस युग में इस्राएल मोआबियों से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखता था। आगे चलकर हम देखेंगे कि मूसा की व्यवस्था के अनुसार एक मोआबी को परमेश्वर की प्रजा में प्रवेश—वर्जित था। मोआबियों का आरंभ बहुत बुरा था, जिसका वर्णन भी उचित नहीं है। इसी कारण उन्हें नीचा देखा जाता था परन्तु रूत की पुस्तक बड़ी रोचक बात प्रगट करती है—जाति—सम्बन्धित बाधाएँ ढा दी गई हैं और परमेश्वर दण्ड के लिए नियत मनुष्यों की चिन्ता करता है, उनसे प्रेम करता है।

यही आज आपकी और मेरी स्थिति है। रोमियों 5:8 में लिखा है, “जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।” और पौलुस कहता है कि ऐसा प्रेम इस संसार में नहीं पाया जाता है। केवल परमेश्वर ही है जो मनुष्यों की सच्ची चिन्ता करता है आप संसार में कहीं भी ऐसा प्रेम नहीं पाएँगे जैसा परमेश्वर पापियों को दिखाता है। और यही कारण है कि रूत ने कहा, “मैं ने तेरी दृष्टि में ऐसा अनुग्रह क्यों पाया?” वह आश्चर्यचकित थी। वह परेदशी थी जाति—बाहर की थी। मेरे विचार में उसका प्रश्न स्पष्ट एवं वास्तविक थी। वह इस जातिवाद की दीवार का गिराया जाना समझ नहीं पा रही थी। उसने ध्यान नहीं दिया कि यहां दिल का मामला था।

अब मैं रूत के इस प्रश्न का उत्तर अच्छी तरह दे सकता हूँ। यदि वह घर जाकर दर्पण देखेगी तो उसे कारण समझ में आ जाएगा। वह सुन्दर थी, आकर्षक थी, उसमें एक स्त्री और एक पत्नी के सब सद्गुण थे। यही कारण था कि बोअज़ को उससे प्रेम हो गया।

उसके इस प्रश्न का तो उत्तर मैं दे सकता हूँ परन्तु एक और प्रश्न है जिसका उत्तर मैं नहीं दे सकता। “मैं ने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह क्यों पाया?” अब आप मुझसे यह नहीं कहना कि घर जाकर दर्पण में अपना चेहरा देखो। मैं देख चुका हूँ। यह सच है मित्रों, कि छवि बहुत आकर्षक नहीं होती है। मुझे दर्पण में उत्तर नहीं मिलता है। परन्तु परमेश्वर ने हम तक अनुग्रह पहुँचाया है और ऐसे विचारक हैं जो रूत की पुस्तक का विषय इसी को मानते हैं। परमेश्वर का अनुग्रह यहाँ इस स्त्री पर प्रकट अनुग्रह द्वारा प्रदर्शित किया गया है और मैं यहाँ तक कहूँगा कि यह अनुग्रह का एक अति उत्तम उदहारण है। आप और मैं परमेश्वर के समक्ष रूत का यह प्रश्न पूछ सकते हैं, “मैंने तेरी दृष्टि में अनुग्रह क्यों पाया है?” हम अपने आप में इसका उत्तर निहित नहीं देखेंगे। हम उसके लिए न तो आकर्षक हैं, न सुन्दर हैं, न सुरम्य हैं। हम में परमेश्वर को अच्छे लगनेवाले गुण नहीं हैं। उसके द्वारा मान्य और पुरस्कार पानेवाले गुण नहीं हैं। हम पापी हैं और परमेश्वर से विद्रोह किए हुए हैं। तथापि, इन सब दोषों के उपरान्त भी परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। यह परमेश्वर के वचन के महान सत्यों में एक है। “उसने इस प्रेम का प्रदर्शन किया है। जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिए मर गया।” उसने अपना अनुग्रह हमें प्रदान किया। मेरे मित्रों, वह आज हमारा उद्धार करता है तो उसका यही आधार है। उसके पास हमारे उद्धार का अन्य कोई कारण नहीं है।

: r 2॥11 में हम पढ़ते हैं,

“बोअज़ ने उत्तर दिया, जो कुछ तू ने पति की मृत्यु के बाद अपनी सास से किया है, और तू किस प्रकार अपने माता-पिता और जन्मभूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिनको तू पहले न जानती थी, यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया गया है।”

जब रूत नाओमी के साथ बैतलहम लौटी थी तब बोअज़ की भेंट उससे नहीं हुई थी क्योंकि वह सम्भवतः किसी अभियान पर गया हुआ था — उन अनेक अभियानों में से एक जो न्यायियों के युग में हुए। आपको स्मरण होगा कि बोअज़ का अर्थ केवल धनवान पुरुष ही नहीं,

महान वकील और महान योद्धा भी है। निःसन्देह वह एक सैनिक था। अतः वह उस समय नगर से बाहर था। जब वह लौटकर आया तब उसने सुना कि नाओमी के साथ एक विधवा बहू आई है।

उसके विषय अच्छी बातें ही की जा रही थीं। बैतलहम भी अन्य स्थानों के समान अफवाहों का स्थान था। अतः वहाँ रूत के बारे में चर्चा हो रही थी परन्तु केवल अच्छी बातें ही की जा रही थीं। यह बड़ी असामान्य बात है। वे उसके बारे में आश्चर्यचकित थे। वे कहते थे, “देखो, यह परदेशी बालिका अपनी सास के साथ आई है और कैसी विश्वासयोग्य है। उसने उसका साथ नहीं छोड़ा। वह किसी पुरुष के पीछे नहीं गई। वह बड़ी अच्छी लड़की है।” बोअज़ को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी अत्यधिक प्रशंसा सुनने के बाद उसे देखा तो वह अनुपम सुन्दरी निकली। अब जब वह उसे देखता है और पाता है कि वह उन सब गुणों की पुतली है, तो मैं आपसे कहता हूँ, यही कारण था कि उसे उससे प्रेम हो गया। अब सुनिए उसके महान आत्म-त्याग के विषय वह क्या कहता है।

: r 2॥12 में हम पढ़ते हैं,

*“यहोवा तेरे कार्य का फल दे, और इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा जिसके पंखों तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा
बदला दे।”*

उसने परमेश्वर को ग्रहण किया था। यही कारण था कि उसने मोआब देश छोड़ दिया और ऐसा आमूल निर्णय लिया। उसने स्पष्ट कहा था कि नाओमी का परमेश्वर उसका परमेश्वर होगा। उसने मूर्तिपूजा त्याग कर जीवित एवं सच्चे परमेश्वर को अपनाया था। अब वह परमेश्वर की सन्तान में से एक थी। अतः इस्राएल में यह एक महान गवाही थी। बोअज़ कहता है, “यहोवा तेरे कार्य का फल दे और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदला दे।” यदि बोअज़ को उससे कोई सरोकार है तो वह उसके पूरे बदले की ओर कार्य करे। वह उससे प्रेम करता है, मित्रों, और वह उसका छुड़ानेहारा ठहरेगा। उसे छुड़ाए जाने की आवश्यकता है।

: r 2॥13 में हम पढ़ते हैं,

*“उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर
बनी रहे, क्योंकि यद्यपि मैं तेरी दासियों में से किसी के भी*

**बराबर नहीं हूँ, तौभी तू ने अपनी दासी के मन में
पैठनेवाली बातें कहकर मुझे शान्ति दी है।”**

यहाँ रूत की प्रतिक्रिया बड़ी रोचक है। उसने सांत्वना की आशा कभी नहीं की थी। उनसे किसी से सद्भाव की आशा नहीं की थी क्योंकि वह बोअज़ की दासियों में से नहीं थी। यही कारण था कि बोअज़ का ध्यान उस पर गया क्योंकि वह अन्य युवतियों से भिन्न थी, आज का हमारा समाज व्यक्ति विशेष होने और अपने विचारों की स्वतंत्रता के बारे में चर्चा करता है। कुछ समय पूर्व मैं कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ वाद-विवाद सत्र में था। यह उनके निवेदन पर आयोजित किया गया था। यह वह आयु होती है जब मनुष्य के मन में अद्भुत विचार आते हैं। वे विद्रोह करते हैं क्योंकि उन्हें पुराने रीति रिवाज़ तोड़ना है। परमेश्वर ने हमें सोद्देश्य ऐसा ही बनाया है। हम इस विषय यहाँ विस्तृत चर्चा नहीं करेंगे। वह युवागण अपनी व्यक्तिगत पहचान और अपने निर्णय तथा अन्यो से भिन्न होने के विषय में विवाद कर रहा था। आप जानते हैं उनके साथ क्या था? वे सब एक जैसे दिखते हैं। उनके बाल, कपड़े, विचार व्यक्त करना आदि सब एक सा ही था। मैं वहाँ बैठा हँस पड़ा। उन्हें मेरी हँसी पर आश्चर्य हुआ। यह बड़ी रोचक बात है कि वे एक पृथक् व्यक्ति होना चाहते हैं परन्तु भीड़ से अलग होना नहीं चाहते। परन्तु रूत सर्वथा भिन्न थी। यही कारण था कि बोअज़ को उससे प्रेम हो गया था। हम भिन्न होना चाहते हैं — वस्त्र धारण द्वारा नहीं — हमें अन्य बातों में भिन्न होना है। यदि परमेश्वर की सन्तान हैं तो आप भिन्न ही होंगे। सोचने की बात करें तो परमेश्वर की सन्तान के विचार सबसे भिन्न होते हैं। उसे सोचना भी है। विश्वासी अल्पसंख्यक हैं। अब हम बोअज़ और रूत को एक बार फिर से देखें। बोअज़ ने रूत को खाने पर आमंत्रित किया! क्या आप सोच सकते हैं? हम उन्हें लगभग असभ्य ही समझते हैं। उस युग में आधुनिकरण तो नहीं था परन्तु वह उससे सुबह 10 बजे भेंट करता है और उसे दिन के खाने पर आमंत्रित करता है। वह उसके साथ दिन का भोजन करती है। मेरे मित्रों, आप आज भी इसमें अधिक सुधार नहीं कर सकते हैं। क्या आप कर पाएँगे?